केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों के कर्मचारियों का संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन

संयुक्त घोषणा—पत्र

बंगलुरु 13 जनवरी 2012

हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लि० बंगलुरु के परिसर स्थित घाटगे सम्मेलन केन्द्र में आयोजित 13 जनवरी 2012 को केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों के कर्मचारियों के संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन में, सभी प्रमुख केन्द्रीय सार्वजनिक उपक्रमों के कर्मचारियों, सभी सम्बद्धता की यूनियनों के साथ ही साथ गैर—सम्बद्ध स्वतंत्र यूनियनों ने भी भारी संख्या में शिरकत की है।

देश के मेहनतकशों के ज्वलन्त एवं अहम् मुद्दों के लिए देश के सभी केन्द्रीय ट्रेड यूनियन संगठनों और औद्योगिक महासंघों की बनी **व्यापक एकता** पर, यह संयुक्त सम्मेलन हार्दिक प्रसन्नता जाहिर करता है। और उनके **28 फरवरी 2012 की देशव्यापी हड़ताल** के निर्णय का पूरी एकजुटता के साथ स्वागत करता है।

केन्द्रीय ट्रेड यूनियन संघों द्वारा नीतिगत पाँच सूत्रीय माँगों :—

1. ***मूल्यवृद्धि रोकने के लिए कारगर कदम उठाने हेतु***
2. ***नए रोजगार का सृजन एवं रोजगार की सुरक्षा हो।***
3. ***सभी श्रम कानूनों का बिना किसी अपवाद अथवा छूट के पालन तथा उल्लंघन करने पर सख्त दण्ड सुनिश्चित हो।***
4. ***असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए सार्वभौम सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था और उसके लिए समुचित धनराशि के साथ "राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा फण्ड" की व्यवस्था हो।***
5. ***केन्द्रीय व राज्य सार्वजनिक उपक्रमों के विनिवेश पर रोक लगे।***

उपरोक्त के साथ ही साथ निम्न माँगों के लिए सरकारों द्वारा तुरन्त प्रभावी कार्यवाही की जाए:—

- ***सभी प्रकार के स्थायी एवं बारहमासी कार्यों में ठेकेदारी को समाप्त करके, सभी ठेका श्रमिकों को उद्योग के स्थायी मजदूरों के समान वेतन—भत्ते एवं सुविधाएँ सुनिश्चित हों।***
- ***न्यूनतम् वेतन भुगतान अधिनियम में संशोधन करके पूरे देश में बिना किसी श्रेणी के ही यह सुनिश्चित हो कि सभी प्रकार के मजदूरों के लिए न्यूनतम् वेतन रु० 10,000/— से कम न हो।***
- ***बोनस एवं पी.एफ. से पात्रता एवं भुगतान की सभी सीमाएँ समाप्त की जाएँ और ग्रेच्युटी की भुगतान राशि को बढ़ाया जाए।***
- ***सभी प्रकार के मजदूरों को पेंशन की एक निश्चित राशि देना सुनिश्चित हो।***
- ***ट्रेड यूनियन का पंजीकरण 45 दिनं की अवधि में सुनिश्चित करके अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के कन्वैन्शन न० 87 एव 98 तुरन्त लागू हों।***

यह संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन लाभ कमाने वाले सार्वजनिक उपक्रमों के **विनिवेश** पर गहरी चिन्ता व्यक्त करता है, जिसके द्वारा सार्वजनिक उपक्रमों को धीरे—धीरे निजीकरण की ओर धकेला जा रहा है। आज इन महारत्न/नवरत्न सार्वजनिक उपक्रमों में सरकार की हिस्सेदारी घटकर इस प्रकार ही रह गयी है:— सेल में 85.82%, एन.टी.पी.सी. में 84.50%, भेल में 67.72%, कोल इण्डिया में 90%, ओ.एन.जी.सी. में 69.14%, आई.ओ.सी. में 78.92%, बी.पी.सी.एल में 54.93%, एच.पी.सी.एल. में 51.11%, बी.ई.एल. में 75.86% और गेल में 57.34% ही रह गयी है। वर्ष 2010—2011 के दौरान कोल इण्डिया लि०, पॉवर ग्रिड कॉरपोरेशन लि०, एन.टी.पी.सी. लि०, ऑयल इण्डिया लि०, नेशनल मैगनीज ओर इण्डिया लि० सतलज जल विद्युत निगम, ई.आई.एल. और एन.एम.डी.सी. आदि के शेयर बेचकर 22,500 करोड़ रुपए की रकम जुटाई गयी है। और वर्तमान वर्ष के दौरान भी 40,000 करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य रखकर, सरकार के विनिवेश विभाग ने पुनः ओ.एन.जी.सी., सेल, पी.एफ०सी., आई.ओ.सी., एम.एम.टी.सी., आर.आई.एन.एल., एन.बी.सी.सी., हिन्दुस्तान कॉपर लि०, भेल, एच.ए.एल. आदि को विनिवेश के लिए सूचीबद्ध किया है। यह स्थिति समूचे सार्वजनिक क्षेत्र के अस्तित्व के लिए ही बहुत बड़ा खतरा पैदा कर रही है।

सार्वजनिक क्षेत्र के केन्द्रीय उपक्रमों का लगातार आशा से कहीं अधिक वित्तीय कार्य प्रदर्शन रहा है, यही नहीं उनका देश के सकल घरेलू उत्पाद और आर्थिक शक्ति में एकल योगदान रहा है। किन्तु यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि निजीकरण/विनिवेश करते समय, सार्वजनिक क्षेत्र का उत्कृष्ट वित्तीय प्रदर्शन भी, पूरी तरह से उपेक्षित ही रहा है। वर्ष 2009—10 में **लाभ कमाने वाले सार्वजनिक उद्यमों** का लाभ पिछले वर्ष के 98,488 करोड़ रुपए से बढ़कर 1, 08, 435 करोड़ रुपए हो गया है। सार्वजनिक क्षेत्र ने उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क, निगमित कर, ऋणों पर व्याज, लाभांश और अन्य शुल्क एवं करों के रुप में वर्ष 2009—10 के दौरान ही, केन्द्र सरकार के खजाने में 1, 30, 830 करोड़ रुपए का **योगदान** किया है। सभी सार्वजनिक क्षेत्र के

उद्यमों का **रिजर्व और अधिशेष** 12.42% की कुल वृद्धि दर के साथ वर्ष 2008–09 के 5, 36, 212 करोड़ रुपए से, वर्ष 2009–10 में बढ़कर 6, 05, 648 करोड़ रुपए हो गया है। वहीं सभी केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों का **निवल मूल्य** भी 12.42% कुल की वृद्धि दर के साथ वर्ष 2008–09 के 5, 87, 286 करोड़ रुपए से, वर्ष 2009–10 मे बढ़कर 6, 60, 245 करोड़ रुपए हो गया है। अर्थात् यदि सार्वजनिक क्षेत्र के निजीकरण/विनिवेशीकरण की यह प्रक्रिया बेरोकटोक जारी रखी जाती है तो यह सारी प्रक्रिया सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी की हत्या कर देने जैसा ही होगा।

यह संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों में स्थायी कर्मचारियों की घटती एवं ठेका मजदूरों की तेजी से बढ़ती संख्या पर गहरी चिन्ता व्यक्त करता है। वर्ष 1980 से वर्ष 2009–10 के दौरान केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों में स्थायी कर्मचारियों की संख्या 23 लाख से घटकर वर्ष 2003–04 में 17.62 लाख उसके बाद और घटकर 2009–10 में मात्र 14.91 लाख ही रह गयी है; स्थायी कर्मचारियों की इस घटती संख्या के समानान्तर ठेका कर्मचारियों की संख्या में तेजी के साथ बढ़ोत्तरी हुई है। ठेका मजदूरों की यह भारी सख्या, उद्योगों की मुख्य उत्पादन प्रक्रिया का भी अभिन्न अंग बन चुकी है। जो एक गम्भीर चिन्ता का विषय है।

साथ ही साथ खेदजनक बात तो यह है कि सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के उत्पादन, उत्पादकता और मुनाफों में भारी योगदान करने वाले इन ठेका मजदूरों को बहुत ही कम वेतन भुगतान किया जा रहा है। और साथ ही साथ अधिकांश उद्योगों में इन्हे सामाजिक सुरक्षा के लाभों से भी वंचित रखा जा रहा है। यहाँ तक कि सार्वजनिक उद्यमों में, जिन ठेका श्रमिकों को उद्योग की मुख्य परिचालन/उत्पादन प्रक्रिया में लगाया जा रहा है, उन्हे वेतन, स्थायी कर्मचारियों के वेतन का 8वॉ हिस्सा या प्रवेश स्तर पर स्थायी कर्मचारी को देय वेतन से भी कम वेतन का भुगतान किया जा रहा है। देश में औद्योगिक सम्बन्धों की पहले से ही बदतर होती जा रही स्थिति के लिए, भेदभाव और विरोधाभास की यह नीति और भी अधिक खतरा पैदा कर रही है।

यह सम्मेलन आई.एल.ओ. के कन्वैन्शन संख्या 87 एवं 98 के तत्काल अनुसमर्थन की माँग करता है, वहीं ठेका मजूदरों के बारे में कन्वैन्शन संख्या सी–97 और सी–98 के अनुसार सार्वजनिक उद्यमों में स्थायी कर्मचारियों के प्रवेश स्तर के वेतन के बराबर वेतन ठेका मजदूरों को दिया जाए। ***यह सम्मेलन जोर देकर यह माँग करता है कि सातवें दौर की वेतन वार्ताओं से पहले की ही तरह "मूल वेतन के 50% के बराबर महँगाई भत्ते को मूल वेतन में विलय" पर सामूहिक सौदेबाजी की पहल की जाए, क्योंकि महँगाई भत्ता नवम्बर 2011 में ही 50% के आँकड़े को पार कर चुका है।***

केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों के कर्मचारियों का यह संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन 28 फरवरी 2012 की देशव्यापी हड़ताल का पूरा समर्थन करता है। और सभी सार्वजनिक उद्यमों के सभी स्थायी एवं ठेका श्रमिकों का आह्वान करता है कि सम्बद्धताओं से ऊपर उठकर इस देशव्यापी हड़ताल को उसी शानदार तरीके से सफल बनाऐं जिस शानदार एकता का परिचय आज के इस ऐतिहासिक सम्मेलन में दिया है।

(ए.एन. डोगरा)
बी.एम.एस.

(डा० जी. संजीवा रेड्डी)
इन्टक

(गुरुदास दासगुप्ता)
एटक

(आर.ए. मित्तल)
एच.एम.एस.

(तपन सेन)
सीटू

(षणमुगम)
एल.पी.एफ.

(बी.वी. मनोहर)
जे.ए.एफ. बंगलुरु

(जे. राघव राव)
पी.एस.यू. टी.यू. कोऑडीनेशन कमेटी हैदराबाद